दैनिक भास्कर
रविवार, 27 दिसंबर 2020 नोएडा

रेगिस्तान की धरती पर सपनों का शहर

गीतांजलि सक्सेना

वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण हमारे ग्रह के लिए सबसे महत्वपूर्ण खतरों में से एक है। यह एक वैश्विक मुद्दा भी है, जिसे आम तौर पर सभी देशों में भविष्य में आने वाले खतरों के रूप में देखा जा रहा है, जिसके लिए संसार के सभी देश विचारशील भी हैं, और इसके संरक्षण के लिए हर महत्वपूर्ण कदम उठाने की ओर क्रियाशील भी रहते हैं। किन्तु सब उपाय शिथिल होते नजर आ रहे हैं।

यह हम सब जानते हैं कि प्रदूषण के प्रभाव निस्संदेह कहीं और व्यापक हो गया है। प्रदूषण का अत्यधिक प्रभाव मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य, वर्षा-वन आदि को नुकसान पहुंच रहा है। ऐसे में यदि यह कहें कि वायु, जल, मिट्टी प्रदूषण आदि सभी प्रकार के प्रदूषणों का पर्यावरण पर अति नकारात्मक प्रभाव बढ़ता जा रहा है, तो शायद गलत नहीं होगा।

आज आधुनिकता और शहरीकरण से, विज्ञान के नाम पर प्रकृति का अत्यधिक दुरुपयोग किया जा रहा है। इसी के परिणामस्वरूप हमारी धरती इतनी प्रदूषित हो गई है कि आज न पीने के लिए साफ पानी है, और न ही सांस लेने के लिए शुद्ध हवा। कभी सोच कर देखें कि इसका जिम्मेदार और कोई नहीं, केवल और केवल मनुष्य ही है। मनुष्यों ने जंगलों में पेड़ों को काटकर सिर्फ अपने लिए ही समस्या उत्पन्न नहीं की है, अपितु अन्य पशु-पक्षियों से भी उनका निवास छीन लिया है। दरअसल, यह भी कह सकते हैं कि अनेक कारण हैं, जो प्रकृति में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं।

कैसे हम भूल जाते हैं कि यह पृथ्वी ही है, जो हमें हमारे स्वास्थ्य और विकास के लिए बहुत सारे प्राकृतिक संसाधन प्रदान करती है। इन संसाधनों को संभालने और संजोए जाने के लिए समय की घंटी बज चुकी है। यह हमारा दायित्व है कि इस ओर किए गये प्रयासों में हम और तेजी लाएं। यही नहीं, हमें अपनी प्रकृति की धरोहर के संरक्षण हेतु हर एक योजना या परियोजना को सफलता की ओर ले जाने के लिए नए पैमानों की खोज कर के, अधिक जानकारी भी हासिल करनी होगी। हमें स्वार्थी न होते हुए, इसी जीवन में हर वे उपाय अपनाने होंगे, जो हमारी अगली पीढ़ी के भविष्य के लिए एक उदाहरण बन सके, और इसकी बागडोर सँभालने में वे गर्व महसूस भी करें। हम जानते हैं कि पर्यावरण को सुरक्षित रखना और इस चुनौती से लड़ना हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है। अब इसका नेतृत्व करना हमारे लिए भी अति आवश्यक है, और जब हम यह करेंगे, तभी प्रदूषण रहित वातावरण में साँस लेना संभव हो पायेगा। यह हमारे स्वास्थ्य और भविष्य को भी प्रभावित करेगा।

मसदर सिटी भविष्य के लिए रोलमॉडल और उदार उदाहरण हैं।

दरअसल, पृथ्वी पर हर एक प्राणी का आसानी से जीवित रहना संभव तभी हो पाएगा, हब हम पर्यावरण की स्वयं रक्षा करेंगे। वक्त का तकाजा भी ये ही है। बस हमें इस समस्या को गहराई से समझ कर इसकी जटिलताओं पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। पर्यावरण संसाधनों को सुरक्षित रखने के लिए हर संभावना की ओर तेजी से काम करना होगा। उन सब मापदंडों को पूरा करने के लिए हमें व्यवस्थित ढंग से कार्य करना होगा। इस कोशिश में अपनी इच्छाशक्ति को भी झोंकना होगा।

यहाँ एक जगह की तस्वीर दिखाना चाहूँगी, जहाँ के लोग पर्यावरण संरक्षण के महत्व को सही मायने में समझते हैं। और यहां अपनी सोच से क्रांति लाकर कार्य करने की पहल करते हुए, उन्हें अपने लक्ष्यों को हासिल होते हुए आगे बढ़ते देख सकते हं। रेगिस्तान की धरती पर सपनों का ऐसा शहर, जो पूरी तरह हरित क्रांति के पैमानों पर बसा हुआ है। यहां दुनिया का एक ऐसा शहर है, जहाँ पर्यावरण संरक्षण हेतु ऐसे सफल प्रयास किया गये हैं कि जो परिवर्तन की कल्पना और सपना परिपूर्ण होने को परिभाषित करता है।

प्रेरणात्मक शहर

मसदर सिटी यहां वह शहर है, जहाँ कार्बन उगलती कारें नहीं चलतीं। केवल यही नहीं, कूड़ा कचरे को भी नये पुनरावृत्ति सिद्धांतों के आधार पर फिर से प्रयोग किया जाता है। यहां पर्यावरण क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों की सोच में क्रांति लाने का अद्भुत उदाहरण मिलता है। अब यह दुनिया का पहला नियोजित शून्य कार्बन शहर है, जो संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी आबूधाबी में है।

इस शहर के तथ्यों और इस ओर किए गए उपायों पर अगर नजर डालें, तो यह समझना सरल हो जाता है कि हर चुनौती से लड़ना मुश्किल जरूर है, किन्तु असंभव बिल्कुल नहीं है।

मसदर सिटी की स्थापना 2018 में हुई थी। तब से आज तक के सफर में अपने नाम कई उपलब्धियां दर्ज करा चुकी है। यह आज जीरो कार्बन सिटी के रूप में पहचानी जाती है। भारत के प्रधानमंत्री भी अपनी यूएई यात्रा के दौरान मसदर शहर से बेहद प्रभावित हुए थे। उन्होंने बिना चालक रहित कार में सफर कर के अपनी खुशी जाहिर भी की थी।

मध्य पूर्व में यह सबसे बड़े समूहों में से एक है, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए किये अध्ययन और संसाधनों को सब से साझा करता है। दुनिया भर में तीस से भी ज्यादा देशों में सक्रिय है।

मसदर सिटी ने दूरदर्शी दृष्टिकोण का पालन करते हुए अपनी अलग जगह बनाई है, जो कि पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान से लेकर उसके विकास और क्रियान्वयन करने तक मदद करता है।

आज के समय से भविष्य में हकीकत हो सकने वाली शहरों की तस्वीर की वास्तविकता बयान करता है। नवीन विचारों और सहयोग से वर्तमान शहरी परिस्थितियों में परिवर्तन लाने में मदद करता है। इसे स्थायी शहरों को विकसित करने के लिए ग्रीन प्रिंट भी कहा जाता है। मसदर शहर आबूधाबी का पहला एसिटडामा पर्ल समुदाय है, जिसके अंतर्गत नवीन हरित मानकों के अनुसार डिजाइन मार्गदर्शन और विस्तृत आवश्यकताओं को पूरा कर के शहर को विकसित करने तक में मदद करता है। पर्ल समुदाय एक रेटिंग व्यवस्था है। यहां पर्यावरण अनुकूल आवास का निर्माण, कम कार्बन सीमेंट के साथ किया जाता है और 90 प्रतिशत पुनः नवीनीकरण एल्यूमिनियम का उपयोग किया जाता है। इस शहर की इमारतों को पारंपरिक इमारतों की तुलना में कम से कम 40 प्रतिशत अधिक ऊर्जा और पानी की खपत कुशल बनाया गया है। मसदर सिटी में पूरी तरह सौर ऊर्जा की पीवी पैनलों द्वारा उत्पन्न विधुत शक्ति का उपयोग किया जाता है।

निर्माण कचरे का भी 90 प्रतिशत पुनः उपयोग किया जाता है, जिसके अंतर्गत उसको भी गैसीकरण प्रक्रिया से ऊर्जा में परिवर्तित किया जाता है। हाल ही में मसदर सिटी ने दुबारा इस्तेमाल के योग्य सामग्री से दुनिया की सबसे बड़ा मोजेक कृति का निर्माण किया है, जिसे गिनीज रिकार्ड में स्थान मिला है।

यहां स्वचालित इलेक्ट्रिक ट्रांसपोर्ट के नेटवर्क के लिए जगह बनाई जाएगी, जो कारों की जगह ले लेगी। पर्यावरणीय प्रभावों को कम से कम करने के हर सम्भव प्रयास भी हो रहे हैं। प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करके, यहां एक नए शहर के सुन्दर सपने को पूर्ण करने के उद्देश्यों से तेजी से आगे बढ़ रहा है। इन पैमानों पर सपनों के स्थाई शहर की स्थापना की जा सकती है। यह मसदर सिटी भविष्य के लिए रोलमॉडल और उदार उदाहरण हैं।

सपनों का शहर हम बनाएं, करें आदर
प्राकृतिक संसाधनों का,
कौन कहता है, हम नहीं कर सकते,
याद रखे देश प्रमुख का मंत्र,
सब का साथ, सब का विश्वास, सब
का विकास ही है लक्ष्य का आधार।